स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)
खण्ड (क) भारतीय साहित्य सिद्धांत – काव्य लक्षण

– डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज, बिरौल

ऋग्वेद में काव्य के स्वरूप को उद्घाटित करते हुए कहा गया है – "मैं अपने कवित्व को बादलों में से फूटकर आने वाली पावस की धारा समझता हूँ।" इसमें काव्य के दो लक्षणों – नैसर्गिक भावोद्रेक और अनुभूति की तीव्रता की अभिव्यक्ति हुई है।

कवि अपने जीवन और जगत् की अनुभूति को शब्द और अर्थ के सामंजस्य का आधार लेकर अपनी प्रतिभा द्वारा जो रचना करता है, उस अभिनव सृष्टि को ही काव्य कहते हैं। जिन रचनाओं को लक्ष्य में रखकर भामह, दण्डी, उद्भट, वामन, रुद्रट, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, राजशेखर, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, मम्मट, विश्वनाथ और पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य का स्वरूप निर्धारित किया था आज उससे भिन्न प्रकार की रचनाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं। इसलिए काव्य के स्वरूप में भी परिवर्तन हो गया है। वस्तुतः प्राचीन आचार्यों द्वारा निर्धारित 'काव्य लक्षण' निम्न हैं –

1. शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं-पद्यं च तत् द्विधा। – भामह
2. काव्य शब्दोऽयं गुणालङ्कारसंस्कृतयोः शब्दार्थयोर्वर्तते। – वामन
3. तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती: पुनः क्वापि। – मम्मट
4. वाक्यं रसात्मकं काव्यं। – विश्वनाथ
5. रमणीयार्थ – प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् – पण्डित जगन्नाथ

पहला लक्षण 'भामह' का है। उनके अनुसार शब्द और अर्थ दोनों का सहभाव ही काव्य है। जहाँ रचना में वर्णित अर्थ के अनुरूप शब्दों का प्रयोग हो या शब्दों के अनुरूप अर्थ का वर्णन हो वहाँ शब्द और अर्थ के सहभाव से काव्य निर्मित होता है। आचार्य कुन्तक ने 'शब्द और अर्थ के सहभाव का अर्थ 'काव्य सौन्दर्य के लिए उनकी न्यूनता या अधिकता से रहित मनोहर स्थिति बताया है। वामन ने अपने लक्षण में शब्द और अर्थ के सहभाव के साथ गुण और अलंकार को भी जोड़ दिया है। वस्तुतः वामन द्वारा निरूपित काव्य लक्षण को समझने के लिए यह भी समझना

Scanned with CamScanner

आवश्यक है कि 'काव्यं ग्राह्यम् अलंकारात्'। अर्थात् अलंकार के योग से काव्य ग्राह्य होता है और अलंकार सौंदर्य के आधार तत्त्व को कहते हैं। गुण और अलंकार दोनों को सौंदर्य का आधार मानते हुए वामन ने गुणों को विशेष महत्व दिया है 'श्लेष,' 'प्रसाद,' 'समता,' 'समाधि,' माधुर्य, ओज, पद सौकुमार्य, अर्थव्यक्ति, उदारता और कान्ति इन्हीं गुणों के समावेश से पद रचना विशिष्ट होती है।

आचार्य मम्मट के काव्य लक्षण को इसी क्रम में देखना चाहिए। उनके अनुसार शब्द और अर्थ का सहभाव काव्य है किन्तु यह सहभाव दोष-रहित, गुण-युक्त और अलंकृत होना चाहिए। कहीं-कहीं अलंकार नहीं होने पर भी काव्य हो सकता है किंतु दोष मुक्त होना चाहिए।

'साहित्य दर्पण' के लेखक कविराज विश्वनाथ ने शब्द और अर्थ के सहभाव के स्थान पर 'वाक्यं' पद का प्रयोग किया है और 'सगुणौ' के स्थान पर 'रसात्मक' विशेषण का। उनके अनुसार काव्य तभी होगा जब वाक्य रसात्मक होगा। 'रस' ही काव्य की आत्मा है। 'रस' के अन्तर्गत भाव, भावाभास, रसाभास आदि सभी का समावेश मान्य है। यदि 'रस' काव्य की आत्मा है तो उसके लक्षण में 'रस' का उल्लेख होना ही चाहिए। इसलिए रसात्मक वाक्य ही काव्य हो सकता है।

पण्डितराज जगन्नाथ ने 'रस' के स्थान पर अर्थ की रमणीयता' पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार ऐसा शब्द-विधान जिससे रमणीय या चमत्कारी अर्थ का प्रतिपादन होता है, काव्य है। वस्तुतः 'शब्द' और 'अर्थ' का सम्बन्ध शक्ति और शक्तिमान के समान नित्य है। अलौकिक चमत्कार के उत्पादन में दोनों की भूमिका समान है। इसलिए काव्य में दोनों का समान महत्व मान्य है।

सभी आचार्यों द्वारा प्रदत्त लक्षणों में एक दूसरे द्वारा दोष निकाला गया किंतु शब्द और अर्थ की महत्ता आज भी काव्य के लिए सर्वोपरि है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' में सत्यं, प्रियं (सुन्दर) तथा हितं (शिवं) को वाणी के गुण बताया गया है —

"अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यंप्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥

अर्थात् काव्य के अलंकारवादी आचार्यों की पुष्टि गीता के इस श्लोक से होती है। दण्डी, रुद्रट आदि (?) ने भी यही परिभाषा और ~~अलंकारवादी~~ महत्ता की